**भाषाविज्ञान की परिभाषा और प्रकार**

भाषा, उच्चारण-श्रवयवों से उच्चरित मूलतः प्रायः यादृच्छिक (वाशागगा)) व्वनि-प्रतीकों की वह व्यवस्था है, जिसके द्वारा किसी भाषा-समाज के लोग श्रापस में विचारों का श्रादान-प्रदान करते हैं. ।

**भाषाविज्ञान की परिभाषा**

भाषा के वैज्ञानिक अध्ययन को ही 'भाषाविज्ञान' कहते हैं। वैज्ञानिक अध्ययन से तात्पर्य सम्यक्‌ रूप से भाषा के बाहरी और भीतरी रूप एवं विकास आदि के अध्ययन से है ।

**भापाविज्ञान के प्रकार—**

**(१) समकालिक**--समकालिक' का अर्थ है किसी एक समय था काल का । इसे 'सांकालिक' भी कहते हैं । यह शब्द ऐतिहासिक का उलठा है । इतिहास में किसी लम्वे काल को लेते हैं, किन्तु उसकी तुलना में समकालिक में एक समय को ही लेते हैं। यह किसी मापा की एक स्थिति का चित्र देता है, इसीलिए इसे स्थित्यात्मक कहा गया है। उदाहरण के लिए, आज हिन्दी का स्वरूप क्या है, यह अध्ययन समकालिक भापाविज्ञान के अंतर्गत आयेगा । ऐतिहासिक अध्ययन कई समकालिक अध्ययनों का आड्ललावद्ध रूप होता है । समकालिक के कई भेद किए जा सकते हैं जिनमें मुख्य

(क) बरनात्मक--इसमें किसी भाषा का एक समय में वर्खन किया जाता है। वर्णन से आशय उसकी ध्वनियों, रूप एवं वावय-गठन आदि के वर्णन से है।

 (ख्र) संरचनात्मक --इसे हिन्दी में रचनात्मक, गठनात्मक धटनात्मक, संघटनात्मक आदि कई नामों से अभिहित किया गया हैं। इसे वर्रानात्मक भाषाविज्ञान का हीं एक विकसित रूप कहा जा सकता है, जिसमें वर्णनात्मक भाषा विज्ञान की तो सारी बातें आ ही जाती हैं, साथ हो भापा विशेष की पूरी संरचना का विश्लेपण करके उसकी आन्तरिक व्यवस्था को भी सामने जाते हैं। समकालिक में इन दो के अतिरिक्त स्तरिक्त व्याकरण, बंधिमी त्था रूपांतरिक व्याकरण भी लिए जा सकते हैं।

**(२) ऐतिहासिक** -- इसमें कई समकालिक अध्ययन को मिला देते हैँ तथा इसमें समय के साथ भाप विज्ञेप में हुए परिवर्तन या विकास का अव्ययन करते हैं । इस तरह इसमें किसी भाषा के विभिन्‍न कालों का स्वरूप श्वुद्लुलावद्ध रूप में सामने आ जाता है। पीछे समकालिक को स्थित्यात्मक कहा जा चुका है। उसकी तुलना में यह गत्यात्मक या विकासात्मक होता है ।

**(३) तुलनात्मक** --इसमें प्रायः एक परिवार की दो या अधिक भापाओं का घ्वनि, रूप, शब्द-समूह, वावय-गठन आदि हदृष्टियों से तुलनात्मक अध्ययन करते हैं। यों एक से अधिक परिवार की भाषाओं का भी इस प्रकार का अध्ययन किया जा सकता है ।परंपरागत रूप में प्रायः ऐतिहासिक ओर तुलनात्मक भापाविज्ञान को एक हो माना जाता है। इसका कारण यह है कि ऐतिहासिक अध्ययन प्राय: तुलनात्मक होता है | किसी भाषा के ऐतिहासिक विकास को देखने के लिए घछुलनात्मक हृष्टि सी डालनी ही पड़ती है। साथ ही किसी भाषा के ऐतिहासिक अध्ययन में या उसके पुराने रूप के पुननिर्माण में तुलनात्मक पद्धति की सहायता अनिवार्य हो जाती है ।

(४) इन तीन के अतिरिक्त भाषाविज्ञान या भाषा-अध्ययन का एक प्रायोगिक रूप भी अब विकसित हो गया है, जिसे प्रायोगिक भाषाविज्ञान कहते हैं । इसमें विदेशी या देशी भाषा कैसे पढ़ाएँ, पाठ्य पुस्तकें, व्याकरण एवं कोश आदि कैसे बनाएँ, अनुवाद केसे करें, टाइपराइटर या भाषा से सम्बद्ध अन्य यंत्रों में घ्वनि आदि की व्यवस्था केसे करें, किसी भाषा के व्याकरण कैसे बनाएं, भाषा-सर्वेक्षण कैसे करें तथा लोगों की उच्चारण-विपयक अथुद्धियों आदि को कैसे दूर करें, आदि व्यावहारिक बातों को लिया जाता है ।